एणे समे इंद्रावतीबाई ए, तामसियो भेली करी।
पड़े राजसियो स्वांतसियो, करे ऊभियो, अंक भरी।। ४३ ।।

उस समय श्री इन्द्रावतीजी ने तामसी सखियों को एकत्र किया और पड़ी हुई राजसी, स्वांतसी सखियों को कोहली (अंक भरकर) भर-भरकर उठाया।

आंझो आणो तमे धणी तणो, हाकली चित करो ठाम।
रामत करतां आवसे, सुन्दरबाई झाले बांहें।। ४४ ।।

तामसी सखी कहती है कि धनी पर विश्वास रखो। डांवाडोल मन को स्थिर करो। सुन्दरबाई बांह पकड़कर कहती है कि वालाजी लीला करने में आएंगे।

मांहोंमांहें विनोद घणो, उठो रामत कीजे रंग।
तरत वालोजी आवसे, आपण जेना अंग।। ४५ ।।

हे सखी! उठो और आपस में हर्ष उल्लास के साथ रामत करो। हम जिन वालाजी के अंग हैं, वह तुरन्त आ जाएंगे।

लीला कीधी जे वालैए, आपण लीजे तेहेना वेख।
अग्यारे वरस लगे जे रम्या, कांई रामत एह वसेख।। ४६ ।।

ग्यारह वर्ष तक ब्रज में वालाजी ने जो रामत की, वही भेष बनाकर हम सब खेल खेलें।

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। ६५९ ।।

राग सामेरी

आनन्दे रोतां रमिए एम, जेने कहिए ते लछण प्रेम।
तेना उडी गया सर्वे नेम, रमतां कीधां कई चेहेन।। १ ।।

सखियों के मन में वालाजी के वियोग का दुःख है और रामत करने का प्रेम दिखाती हैं, इसलिए इसको आनन्द और रुदन दोनों भाव से प्रेम दर्शाया है। रामत में उनके सब नियम भंग हो गए और कई तरह के स्वांग किए।

सखी प्रेम ध्वजा केहेवाय, जेनूं प्रगट नाम कुली मांहें।
ए तो प्रेम तणां जे पात्र, आपणथी अलगो न थाय खिण मात्र।। २ ।।

सखियां ही कलियुग में प्रेम की स्वरूप होंगी। वालाजी प्रेम के पात्र हैं जो हमसे पलमात्र के लिए भी अलग नहीं होंगे।

ए अलगो थाय केम, आपण कहूं करे वालो तेम।
अमे आतम सखियो एक, रमतां दीसे अनेक।। ३ ।।

यह हमसे अलग कैसे होंगे? हम जैसा कहेंगे, वालाजी वैसा ही करेंगे। हम सब सखियों की आत्मा एक है। खेल में हम अनेक दीख रहे हैं।

अमे परसपर कीधां परियाण, सखियो ते सर्वे सुजाण।
आपण लीधा वेख अनेक, जे कीधां वालैए वसेक।। ४ ।।

हमने आपस में सलाह की कि सखियां तो सब जानती ही हैं कि वालाजी ने ब्रज में क्या-क्या खेल खेले। इसलिए उस लीला के विभिन्न भेष बनावें।

Nijanand App

आपणमां थई वेख एक स्याम, जेंणे निरखे पोहोंचे मन काम।
वली थई वेख एक नंद, ते कान्हजी लडावे उछरंग।।५ ।।

हम में से एक सखी श्याम बने, जिनको देखकर मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। फिर एक सखी नन्द बने जो उमंग से कन्हैया से लाड लडाते हैं।

सखी वेख पूतना नार, भर जोवन आवी सिणगार।
विख भर्‌यां तेना अस्थन, आवी धवरावे कपटे मन।।६ ।।

एक सखी पूतना का भेष धारण करती है। शृंगार करके जो युवती (पूतना) बनकर आती है, उसके स्तनों में विष लगा है और मन में कपट रखकर दूध पिलाती है।

चेहेन कीधां ने पामी मृत, विख वालाने थयूं अमृत।
सोसी लीधी पूतना नार, गोकुलमां ते जय जयकार।।७ ।।

ऐसा नाटक करके पूतना ने मृत्यु प्राप्त की। वालाजी को विष अमृत तुल्य हो गया। उन्होंने पूतना के प्राण खींच लिए। पूरे गोकुल में जय-जयकार होने लगी।

वेख लीधां सखियो विचारी, दैत लीधां ते सहु संघारी।
अंग आडो दीधो कै वार, वृज लोक ते सकल करार।।८ ।।

कुछ सखियों ने राक्षस का भेष धारण किया। उनका वालाजी ने संहार किया। ब्रज में इस प्रकार की लीला में कई बार वालाजी को कष्ट उठाने पड़े, जिससे ब्रज वालों को शान्ति मिली।

एक जाणे जसोदा होय, कान्हजी माखण मांगे रोय।
उहां दूध चूल्हे उभराय, मातानूं मन कलपाय।।९ ।।

एक सखी यशोदाजी बनी, जिससे कन्हैयाजी रो-रोकर माखन मांगते हैं। यशोदाजी देखती हैं कि चूल्हे पर रखे दूध में उफान आ रहा है, तो माताजी का मन दुःखता है।

कान्हें छेडो ग्रह्यो उजातां, जसोदाजी थयां रीसे रातां।
कान्ह कहे माखण आपो पेहेलूं, त्यारे जाणे लाग्युं माताने गेहेलूं।।१० ।।

कन्हैयाजी ने भागती यशोदा मैया का पल्ला पकड़ लिया तो यशोदाजी क्रोधित हो गईं। कन्हैयाजी कहते हैं कि पहले मुझे माखन दो। तब यशोदाजी को ऐसा लगा कि कन्हैया पागल हो गया है क्या?

जोरे छेडो लीधो तत्काल, नसो चढावी निलाट।
जसोदाजी गया उजाई, आगल दूध गयूं उभराई।।११ ।।

यशोदाजी ने गुस्से में आकर पल्ला छुड़ाया। जब तक यशोदाजी दौड़कर पहुंचती हैं। इतने में दूध उबल कर फैल गया।

कान्हजीने रीस अति थई, पेहेलू माखण दई न गई।
ते ता झाली न रही रीस, घोलीना कीधां कटका वीस।।१२ ।।

इधर कन्हैयाजी को इतना गुस्सा आ गया कि पहले मुझे माखन क्यों नहीं दिया, तो उन्होंने गुस्से में आकर मटकी तोड़ डाली और बीस टुकड़े कर दिए।

Nijanand App

तिहां दोडीने आवी मात, देखी कान्हूडानो उतपात।
दामणूं लीधूं जसोदाए, कान्हजी पाखल पलाए।। १३ ।।

कन्हैयाजी की ऐसी शरारत देखकर माता दौड़कर आईं और हाथ में रस्सी लेकर कन्हैयाजी के पीछे भागने लगीं।

आगल कान्हजी उजाय, जसोदाजी ते वांसे धाय।
माताने श्रम अति थयो, तिहां कान्हजी ऊभो थई रह्यो।। १४ ।।

आगे-आगे कन्हैयाजी भाग रहे हैं, पीछे यशोदाजी भाग रही हैं। माताजी थक गईं तो कन्हैयाजी खड़े हो गए।

कट दामणिए न बंधाय, तसू चार ते ओछूं थाय।
वली दामणूं बीजूं लिए, गांठों अनेक विधे दिए।। १५ ।।

कन्हैयाजी की कमर रस्सी से बंधती नहीं है। रस्सी चार अंगुल छोटी हो जाती है। फिर यशोदाजी ने दूसरी रस्सी लेकर गांठ लगाई।

एम लीधां दामणां अपार, तसू घटे ते चारना चार।
वली देखी मातानूं श्रम, कान्हें मूक्या दामणां नरम।। १६ ।।

इस प्रकार अनेक रस्सियां जोड़ीं फिर भी चार अंगुल जगह बची। जब यशोदाजी थक गईं तो कन्हैयाजी ने रस्सी ढीली कर दी।

त्यारे एक दामणें बेंहू हाथ, बांधी कट ऊखल संघात।
एवो बांध्यो दामणिए बंध, जुओ कान्हजी रुए अचंभ।। १७ ।।

तब एक ही रस्सी से दोनों हाथ और कमर ऊखल के साथ बंध गई। इस प्रकार से रस्सी से बंधने पर बनावटी रोना रोने लगे।

तिहां रोतो रीकतो जाय, रह्यो बिरिख ऊखल भराय।
तिहां थी निसरवा कीधूं जोर, पड्यो विरिख थयो अति सोर।। १८ ।।

वह रोते-सिसकते घुटने के बल जा रहे थे, तब ऊखल दो वृक्षों के बीच आ गया। वहां से निकलने के लिए जोर लगाया तो दोनों पेड़ बड़ी आवाज से गिर गए।

तेमां पुरुख बे प्रगट थया, अंग मोडीने ऊभा रह्या।
कर जोडीने अस्तुत कीधी, तेणे तरत वाले सीख दीधी।। १९ ।।

दोनों पेड़ों से दो पुरुष प्रगट हुए। (नलकूबर और मनीग्रीव—जो देवलोक में तालाब में नहा रहे थे, वहां नारदजी के आने पर प्रणाम न करने पर नारदजी के श्राप से पेड़ बने थे) वह नग्न थे और अंग मोड़कर तिरछे खड़े हुए थे। उन्होंने हाथ जोड़कर कन्हैयाजी की स्तुति की और उन्हें कन्हैयाजी ने उपदेश देकर मुक्त किया।

इहां आवी जसोदा उजाणी, कान्हजी भीडी रही भुज ताणी।
स्वांस मांहें न माय स्वांस, मुख चुमती आस ने पास।। २० ।।

(आवाज सुनकर) यशोदाजी दौड़ी-दौड़ी आईं। कन्हैयाजी पेड़ों के बीच में फंसे पड़े थे। मारे घबराहट के यशोदाजी की सांस फूल रही थी। (कन्हैयाजी को उठाकर) बार-बार मुख चूमने लगीं।

Nijanand App

एक धरे ते गोवरधन, हरख उपजावे मन।
इंद्रनो कीधो मान भंग, एम रमे ते जुजवे रंग।। २१ ।।

एक सखी गोवर्धन की लीला करती है, जिससे सबको आनन्द प्राप्त होता है। इन्द्र का मान भंग होता है। इसी प्रकार विभिन्न लीलाओं का स्वांग रचाती हैं।

लई चारे वाछरू वन, मांहोंमांहें गोवाला जन।
हाथ मांहें वांसली लाल, मांहें रामत करे रसाल।। २२ ।।

कन्हैयाजी ग्वालवालों के साथ वन में बछड़े चराने जाते हैं। हाथ में लाल बांसुरी है। ऐसी रामत होती है। वह आनन्द से खेलते हैं।

आपणमां कोइक कामनी वेख, एक वेख वालोजी वसेख।
वालो पूरे कामनीनां काम, भाजे हैडा केरी हाम।। २३ ।।

अपने बीच में कोई एक सखी वालाजी का भेष धारण कर दूसरी सखी के प्रेम की तड़प को शान्त करती है और मन की चाह पूर्ण करती है।

एक दाणलीला वेख नार, मही माथे मटुकी भार।
वालो करे तेसूं हांस, लिए माखण ढोले छास।। २४ ।।

एक सखी दान-लीला का भेष धारण करती है। सिर पर दही की मटकी का बोझा है। वालाजी उससे हंसी करते हैं। माखन छीन लेते हैं और छाछ गिरा देते हैं।

कहे वचन सामा कामनी, गाल जुगते दिए भामनी।
तेणी लिए मटुकी उजाय, वालो गोरस गोवालाने पाय।। २५ ।।

वह गोपी सामने आकर निराले ढंग के साथ गाली देने का नाटक करती है। वालाजी मटकी छीनकर भाग जाते हैं और गोरस ग्वालों को पिला देते हैं।

वालो वृजमां रम्या जे जुगते, अमे सहु वेख लीधां ते विगते।
पिउडो तोहे न दीसे क्यांहे, कालजडूं कांपे मांहें।। २६ ।।

वालाजी जिस ढंग से ब्रज में खेले थे, वैसे ही सभी ने उनके स्वांग रचकर लीला की। फिर भी वालाजी दिखाई न दिए। इसीलिए अन्दर-अन्दर हृदय कांपने लगा।

राजसिए कीधो विरह जोर, रुए पाडे बुंब बकोर।
स्वांतसियो बेसुध थाय, तामसियोने आंझो न जाय।। २७ ।।

राजसी सखियों को विरह ने सताया और वह जोर-जोर की आवाज से रोने लगीं। स्वांतसियां (सात्विकी सखियां) बेसुध हो गईं। तामसियों का विश्वास स्थिर रहा।

एक वेख वाले वेण वायो, साथ सहु जोवाने धायो।
जाणे वेण वालानो थयो, सोक रुदया मांहेंथी गयो।। २८ ।।

इतने में वालाजी का भेष धारण करने वाली सखी ने बांसुरी बजाई। सब सखियां देखने के लिए दौड़ीं। सबको ऐसा लगा कि बांसुरी वालाजी ने बजाई है। इससे उनके हृदय का दुःख शान्त हुआ।

Nijanand App

सहुने सरूप रुदेमां समाणो, आवी आनंद अंग उभराणो।
उलस्या मलवाने अंग, मांहेंथी प्रगट्या उछरंग।। २९ ।।

सभी सखियों के हृदय में वालाजी का स्वरूप समाया और वे आनन्द से भर गईं। सबके मन में अंग से मिलने का उल्लास अन्दर से जागृत हो गया।

वली मांडी ते रामत जोर, गाए गीत करे अति सोर।
त्यारे हरख वाध्यो अपार, आव्यो जुवतीनो आधार।। ३० ।।

उन्होंने फिर से जोरदार रामत खेली। गीत गाती हैं और शोर मचाती हैं। उनके हृदय में खुशी बढ़ गई, क्योंकि सखियों के प्राणाधार आ गए। (साक्षात् प्रगट हो गए)

दोडी वलगी वालाने वसेख, जाणे पिउजी हुता परदेस।
सघलीना हैडा मांहें, हाम मलवानी मन मांहें।। ३१ ।।

दौड़कर सभी वालाजी से लिपटीं और ऐसा जाना कि पिया परदेश गए थे। सबके दिल में वालाजी से (अंगों अंग) मिलने की चाह है।

वालेजीए कीधो विचार, केम मलसे सघली नार।
त्यारे देह धरया अनेक, सखी सखी प्रते एक।। ३२ ।।

वालाजी ने विचार किया कि सब सखियों से एक साथ कैसे मिलें? तब उन्होंने एक-एक गोपी से मिलने के लिए उतने ही तन धारण कर लिए।

सखी सहुने मल्या एकांत, रम्या वनमां जुजवी भांत।
वाले पूरण मनोरथ कीधां, अनेक विधे सुख दीधां।। ३३ ।।

सब सखियों से वालाजी वन में इस प्रकार एकान्त में अलग-अलग तरीके से मिले और रामत की तथा सबकी मनोकामना पूर्णकर प्रत्येक सखी को उसकी इच्छानुसार सुख दिए।

इंद्रावतीने आनन्द थाय, उमंग अंग न माय।
वली रमे नाना विध रंग, कांई वाध्यो अति उछरंग।। ३४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी के अंग में उमंग नहीं समाती है। वह बड़े आनन्द में हैं कि फिर से उमंग के साथ तरह-तरह से खेलेंगे।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। ६९३ ।।

चरचरी राग केदारो

उछरंग अंग सुन्दरी, हेत चित मन धरी।
सुख ल्याविया वालो वली, सुख ल्याविया वालो वली।। १ ।।

सखियों के मन में उमंग भरी है और हृदय में स्नेह भरा है। वालाजी फिर से सुख ले आए हैं।

कर मांहें कर करी, सकल मली हरवरी।
बांहें न मूके स्यामतणी, अलगी न जाय कोय टली।। २ ।।

हाथ में हाथ देकर सब उतावली में मिलीं। वालाजी की बांह नहीं छोड़ती हैं और कोई भी अलग नहीं होती है।

Nijanand App